



Original Article

कवि एवं गीतकारों का हिंदी सिनेमा में योगदान

प्रा. डॉ. शाहीन अब्दुल अजीज पटेल

सहयोगी प्राध्यापक

शंकरराव जगताप आर्ट्स & कॉमर्स कॉलेज वाघोली, तह.कोरेगाव. जि. सातारा

Manuscript ID:

IJAAR-C130349

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 247 - 249

Submitted: 1 Feb. 2026

Revised: 10 Feb. 2026

Accepted: 15 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. डॉ. शाहीन अब्दुल अजीज पटेल

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786369

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786369>



Creative Commons



प्रस्तावना:

काव्य हिंदी साहित्य की एक ऐसी विधा है, जिसमें कवि गिने चुने शब्दों के माध्यम से अपनी सशक्त भावनाओं की अभिव्यक्ति सहजता से करता है। अर्थात् भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम काव्य है। नौ रसों का संपूर्ण परिपाक काव्य में पाया जाता है। वीर, शृंगार, वात्सल्य, आदि। कवि अपनी प्रतिभा के बल पर काव्य करता है और कविता पाठ करनेवाला पाठक उस कविता में छिपा भावार्थ अपनी आकलन शक्ति के आधार पर कर, रस ग्रहण करता है। यहां रस ग्रहण के लिए पाठक का रसिक एवं शिक्षित होना अनिवार्य है, लेकिन यही काव्य जब गीत का रूप धारण करता है, तो वह गेय (गाने योग्य) बन श्रावणिय बन जाता है। यहां श्रोता का शिक्षित होना अनिवार्य नहीं। काव्य के गीत बन जाने पर उससे शिक्षित और अशिक्षित दोनों रसग्रहण करते हैं, क्योंकि काव्य से गीत बनते- बनते उस पर अनेक संस्कार होते हैं। जैसे उसमें संगीतात्मकता, लयबद्धता, गेयता आ जाती है। कविता से गीत बनाते समय उसे सुमधुर बनाना सर्व प्रमुख उद्देश्य होता है और इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु आज फिल्मी गीतकार पहले धुन बनाते हैं और फिर उस धुन के आधार पर शब्दांकन होता है। यहां शब्द पीछे छूट जाते हैं और संगीत प्रमुख बन जाता है। लेकिन पहले ऐसा नहीं होता था पहले गीत बनता फिर धुन। इसलिए तो गीत अर्थ भरे गीत कहलाते थे। जिसमें भावों को सर्वोपरि रखा गया था। इसीलिए भावों से ओतप्रोत गीत आज भी अजर- अमर हैं। हिंदी साहित्यकारों द्वारा जो गीत रचे गए हैं, उनको जब हम सुनते हैं, तो यह तथ्य सामने आता है कि वह गीत, गीत ना होकर प्रियतम और प्रियतमा की बातचीत हैं। अर्थात् जो पहले कविता मात्र थी आगे चलकर संगीत बद्ध होकर गीत बनता है और यही गीत अभिनीत होने पर श्रव्य एवं दृश्य दोनों प्रकार से आनंद प्रदान करता है। आज अनगिनत हिंदी साहित्यकार हैं जो हिंदी फिल्मी दुनिया में गीतकार के रूप में अपना योगदान दे रहे हैं।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. डॉ. शाहीन अब्दुल अजीज पटेल. (2026). कवि एवं गीतकारों का हिंदी सिनेमा में योगदान. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 247 - 249. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786369>



वीर रस को केंद्र में रखकर काव्य करने वाले कवियों में कवि प्रदीप अग्र स्थान पर हैं। हिंदुस्तान की आजादी के समय भारतीय सेना को चेताने की गरज से उनके द्वारा रचित गीत अज भी हमारी धमनियों में रक्त संचारित करते हैं,

“ए मेरे वतन के लोगों
जरा आंख में भर लो पानी
जो शहीद हुए हैं उनकी
जरा याद करो कुर्बानी”¹

इस गीत ने 1947 में जंगे आजादी के समय जो वीर रस का प्रभाव सैनिकों एवं भारतीयों पर डाला था, उस प्रभाव में आज 79 साल बाद भी कमी नहीं आई है। इस गीत के शब्दों में, संगीत में, दृश्य में वह ताकत है जिसने सभी भारतीयों को मंत्रमुग्ध, एवं भाव विभोर कर दिया है। आज भी वीरों की धमनियों में वीर रस खौलने लगता है। इस परिणाम का श्रेय जाता है उचित एवं मार्मिक शब्दांकन को। ओजस्वी संगीत को, एवं अप्रतीम दृश्यात्मकता को।

समय की मांग को ध्यान में रखकर जिस प्रकार कवि प्रदीप ने वीर रस से ओत-प्रोत काव्य का सृजन किया, उसी प्रकार उन्होंने आजादी मिलने के पश्चात बापूजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उस महामानव को शब्द सुमनांजलि पेश की, कवि प्रदीप कहते हैं,

“दे दी हमें आजादी, बिना खड़ग बिना ढाल
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल”²

अपने आत्मीय भावों को, अपने हृदयोद्भगारों को, अपनी कृतज्ञता को, मिली आजादी को कवि ने भावपूर्णता से अभिव्यक्त किया है। अहिंसा के मार्ग से आजादी दिलाने वाले महात्मा के प्रति समर्पित यह भाव केवल कवि प्रदीप के नहीं, तो अखिल विश्व मानव जाति के भाव के रूप में सामने आते हैं।

यह गीत देखने और सुनने वालों के हृदय में वही भाव उत्पन्न करते हैं, जो कवि प्रदीप के हृदय में उमड़े थे। इसमें प्रयुक्त शब्दों में, एवं संगीत में इतना सामर्थ्य है, कि हम अनुभूति के धरातल पर समान स्तर पर आ जाते हैं। ‘दे दी हमें आजादी बिना खड़क बिना ढाल’ बस इतने ही शब्दों में कवि ने संपूर्ण अहिंसा की व्याख्या की है। अहिंसा तत्व को स्पष्ट करने के लिए एक संपूर्ण गद्य कृति भी असमर्थ है। जो प्रभाव इन चंद काव्य पंक्तियों में है, संपूर्ण विश्व के सामने अहिंसा का मार्ग रखने का प्रयास इन चंद पंक्तियों ने किया है। हिंदुस्तान में रहने वाले हर बाशिंदे के रोम-रोम में वतनपरस्ती कूट-कूट कर भरी है। प्रेम, दया, शांति, समर्पण, सहिष्णुता, विश्वबंधुत्व, जैसे भाव से, ओतप्रोत, निसर्ग से संपूर्ण इस भारत भूमि के प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए कवि जावेद अख्तर कहते हैं,

“यही तोहफा है, यही नजराना, मैं जो आवारा नजर लाया हूं
रंग में तेरे मिलने के लिए कतरा ए खून ए जिगर लाया हूं
ए गुलाबों के वतन”³

गागर में सागर भर देने वाले यह शब्द जिनके माध्यम से कवि जावेद अख्तर ने अपनी संपूर्ण भावनाओं को अभिव्यक्त किया है। हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई, सभी के अथक परिश्रम एवं कुर्बानी के बलबूते पर यह देश आजाद हुआ। आजादी मिलने के पश्चात अनेकों ने अनेक सपने संजोये। इन सपनों को पूर्ण करने की की जद्दोजहद में फिर किसी को हिंदुस्तान की गोद मिली, तो किसी को रोजी-रोटी की तलाश में यहां से बाहर जाना पड़ा। घरवाले, रिश्तेदार, दोस्त – अहबाब सभी यहीं रह गए और कर्ता पुरुष विदेश जा बसा। ऐसी अवस्था में जब उसे हिंदुस्तान याद आता है, तो उसके हृदय से यही भाव फूट पड़ते हैं,

“हम तो हैं परदेस में, देश में निकला होगा चांद
अपनी रात की छत पर, कितना तन्हा होगा चांद”⁴



राही मासूम राजा ने ,प्रस्तुत पंक्तियों में देश से दूर रहने की व्यथा का बयान किया है I हृदय की छटपटाहट शब्दों में बयान की है I देश से कोसों दूर हो जाने पर रुपया तो जरूर कमाते हैं,पर अपनों से दूर रहने का गम इन रुपयों के सामने कहीं अधिक है I मजबूरन जो इंसान बाहर जाकर बसा उसका रुदन ,हृदय विघलित कर देने वाला है I आनंद बक्शी द्वारा लिखित

“चिट्ठी आई है, चिट्ठी आई है

बड़े दिनों के बाद ,हम बे वतनों को याद

वतन की मिट्टी आई है”⁵

प्रस्तुत प्रत्येक शब्द उन सभी के हृदय की टीस है ,जो आज विदेश में जा बसे हैं I यहां आनंद बक्शी का केवल एक व्यक्ति का दुख नहीं तो इस दुख में वह प्रत्येक व्यक्ति सम्मिलित है जो इस प्रसंग से गुजर रहा है I बस उन्हें वाणी देने का कार्य आनंद बक्शी द्वारा हुआ हैI

निष्कर्ष :

वेदना के धरातल पर हम सभी की वेदना समान है I पर शब्द सामर्थ्य की शक्ति गिने-चुने लोगों में ही होती है और उन्हें ही हम हिंदी गीतकार ,हिंदी साहित्यकार कहते हैं I जो

हमारी वेदना को शब्द रूप देने का कार्य बड़ी सरसता से करते हैं I काव्य प्रतिभा के धनी यह गीतकार ,कार्य प्रतिभा के बल पर शब्दों को आदेश देते हैं और शब्द एक कतार में भावों का जखीरा लिए ,हृदय के भावों का उद्घाटन करते हैं I जिसमें कभी दुख तो कभी सुख शामिल है I हिंदी साहित्यकारों ने अपनी प्रतिभा के आधार पर सभी प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति बड़ी बड़ी सशक्तता के साथ की है I देश की आजादी, देश की वर्तमान स्थिति, समाजधर्म ,राजनीति, साहित्य ,खेल,मनोरंजन,सामाजिक स्थिति का सर्वांगीण चित्रण हू-बहू किया है I आज इस फिल्मी दुनिया में कोई क्षेत्र अछूता नहीं बचा हैI साहित्यकारों द्वारा प्रत्येक परिस्थिति का चित्रांकन हुआ दिखाई देता है I

संदर्भ:

1. कवि प्रदीप
2. कवि प्रदीप
3. मजरुह सुतानपुरी
4. निदा फाजली
5. आनन्द बक्शी